BSKC-132

Bachelor of Arts - Sanskrit (Multidisciplinary) (BAM)

Assignment for Janurary 2024 Session

पाठ्यक्रम – BSKC - 132
संस्कृत गद्य साहित्य

सत्रीय कार्य
(जनवरी–2024 सत्र के लिए)

पाठ्यक्रम कोड : बी.एस.के.सी.–132
संस्कृत गद्य साहित्य

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068

Bachelor of Arts - Sanskrit (Multidisciplinary)
(BAM)
Assignment for
Janurary 2024 Session
संस्कृत गद्य साहित्य

पाठ्यक्रम कोड : **BSKC –132/जनवरी–24**

प्रिय छात्र/छात्राओं,

यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य (ज्ड।) है । सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं । सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जायेंगे ।

उद्देश्य : शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं । यहाँ पाठ्य सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान जो कुछ सीखा और समझा है उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें ।

निर्देश : सत्रीय कार्य आरम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िये :

1.) अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनाँक लिखिए ।

2.) बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख करें जैसा आगे दिखाया गया है :

––अनुक्रमांक : .....

नाम : .....

पता : .....

पाठ्यक्रम का नाम/कोड : .....

सत्रीय कार्य कोड : .....

अध्ययन केन्द्र का नाम/कोड : .....

दिनाँक : .....

सत्रीय कार्य जमा करने की अंतिम तिथि
जनवरी 2024 सत्र के लिए : 31 अक्टूबर, 2024

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

1. अध्ययनः सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए । फिर इससे संबंधित इकाईयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए । अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ विशेष बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढ़ग से व्यवस्थित कीजिए ।
2. अभ्यासः उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए । अनावश्यक बातों को हटा दीजिए और प्रत्येक बिन्दु पर विस्तार से विचार कीजिए । निबन्धात्मक या टिप्प्णीपरक प्रश्नों में आरम्भ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए । उत्तर के आरम्भिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए । मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्धता और तार्किक ढ़ग से प्रस्तुत करें । उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए ।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,

ख) उत्तर सही ढ़ग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,

ग) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियों न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें ।

3. प्रस्तुतिः जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ, तो उसे साफ़ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए ।

शुभकामनाओं के साथ ।

नोट : याद रखें कि विश्वविद्यालय के नए नियमानुसार परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

संस्कृत गद्य साहित्य
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : BSKC –132
पाठ्यक्रम शीर्षक : संस्कृत पद्य साहित्य
सत्रीय कार्य : BSKC –131 / जनवरी–2024

पूर्णांक : 100
नोट – सभी प्रश्न अनिवार्य हैं : –

भाग–क

(क) व्याख्या आधारित प्रश्न : –

1. अधोलिखित गद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए– 20x2=40

(क) एवं विधयापि चानया दुराचारया कथमपि दैववशेन परिगृहीताः विक्लवा भवन्ति राजानः, सर्वाविनयाधिष्ठानतां च गच्छन्ति । तथाहि अभिषेकसमय एव चैतेषां मङ्गलकलशजलैरिव प्रक्षाल्यते दाक्षिण्यम् । अग्निकार्यधूमेनेव मलिनीक्रियते हृदयम्, पुरोहितकुशाग्र सम्मार्जनीभिरिव अपह्रियते क्षान्तिः, उष्णीषपट्टबन्धेनेव आच्छाद्यते जरागमनस्मरणम्, आतपत्रमण्डलेनेव अपसार्यते परलोकदर्शनम्, चामरपवनैरिव अपह्रियते सत्यवादिता, वेत्रदण्डैरिव उत्सार्यन्ते गुणाः, जयशब्दकलकलैरिव तिरस्क्रियन्ते साधुवादाः, ध्वजपट पल्लवैरिव परामृश्यते यशः।

अथवा

कामं भवान् प्रकृत्यैव धीरः । पित्रा च महता प्रयत्नेन समारोपितसंस्कारः, तरलहृदयम् अप्रतिबुद्धं च मदयन्ति धनानि। तथापि भवद्गुणसन्तोषो मामेवं मुखरीकृतवान् । इदमेव च पुनः पुनरभिधीयसे। विद्वांसमपि सचेतनमपि महासत्त्वमपि अभिजातमपि धीरमपि प्रयत्नवन्तमपि पुरुषमियं दुर्विनीता खलीकरोति लक्ष्मीरिति । सर्वथा कल्याणैः पित्रा क्रियमाणमनुभवतु भवान् नवयौवराज्याभिषेकमङ्गलम् । कुलक्रमागतामुद्बह पूर्वपुरुषैः ऊढां धुरम्। अवनमय द्विषतां शिरांसि । उन्नमय स्वबन्धुवर्गम्। अभिषेकानन्तरं च प्रारब्धदिग्विजयः परिभ्रमन् विजितामपि तव पित्रा सप्तद्वीपभूषणां पुनर्विजयस्व वसुन्धराम्। अयं च ते कालः प्रतापमारोपयितुम्। आरूढप्रतापो हि राजा त्रैलोक्यदर्शीव सिद्धादेशो भवति इत्येतावदभिधाय उपशशाम । उपशान्तवचसि शुकनासे चन्द्रापीडस्ताभिरूपदेशवाग्भिः प्रक्षालित इव, उन्मीलित इव, स्वच्छीकृत इव, निर्मृष्ट इव, अभिषिक्त इव, अभिलिप्त इव, अलङ्कृत इव, पवित्रीकृत इव, उद्भासित इव, प्रीतहृदयो मुहूर्त स्थित्वा स्वभवनमाजगाम ।

(ख) यावदेष ब्रह्मचारी बटुरलिपु' जमुद्धय कुसुमकोरकानवचिनोति; तावत् तस्यैव सतीथ्यर्थोऽपरस्तत्समानवयाः कस्तूरिका–रेणु–रूषित इव श्यामः, चन्दन–चर्चित–भालः, कर्पूरागुरु–क्षोद–च्छुरित–वक्षो–बाहु–दण्डः, सुगन्ध–पटलैरुन्निद्रयन्निव निद्रा–मन्थराणि कोरकनिकुरम्बकान्तराल–सुप्तानि मिलिन्द–वृन्दानि झटिति समुपसृत्य निवारयन् गौरबटुमेवमवादीत्–

अथवा

ततः स उवाच–

"महात्मन् ! क्वाधुना विक्रमराज्यम् ? वीरविक्रमस्य तु भारतभुवं विरहय्य गतस्य वर्षाणां सप्तदश–शतकानि व्यतीतानि । क्वाधुना मन्दिरे मन्दिरे जयजयध्वनिः? क्व सम्प्रति तीर्थे तीर्थे घण्टानादः? क्वाद्यापि मठे मठे

वेदघोषः ? अद्य हि वेदा विच्छिद्य वीथीषु विक्षिप्यन्ते, धर्मशास्त्राण्युद्धृय घूमध्वजेषु घ्मायन्ते, पुराणानि पिष्ट्वा पानीयेषु पात्यन्ते, भाष्याणि भ्रंशयित्वा भ्राष्ट्रेषु भर्ज्यन्तेः "क्वचिन्मन्दिराणि भिद्यन्ते, क्वचित् तुलसीवनानि छिद्यन्ते, क्वचिद् दारा अपह्रियन्ते, क्वचिद् धनानि लुण्ठ्यन्ते, क्वचिदार्त्तनादाः, क्वचिद् रुधिरधाराः, क्वचिदग्निदाहः, क्वचिद् गृहनिपातः" इत्येव श्रूयतेऽवलोक्यते च परितः ।

भाग– ख
(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)
नोट : निम्नलिखित में से प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 700 शब्दों में लिखिए। 15 x 2 = 30

2. गद्य के स्वरूप को बताते हुए उसके भेदों का विवेचन करें।

अथवा

दण्डी के व्यक्तित्व और कर्तृव्य पर प्रकाश डालिए।

3. 'शुकनासोपदश' के आधार पर 'लक्ष्मी' का वर्णन कीजिए।

अथवा

शिवराज विजय की कथा वस्तु को अपने शब्दों में लिखिए।

भाग–ग
(लघु उत्तरीय प्रश्न)

नोट : निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए। 5 x5=25

4. संस्कृत गद्यकाव्य के उद्भव और विकास पर लेख लिखिए।

5. पण्डिता क्षमाराव के व्यक्तित्व और उनके कर्तृतव पर प्रकाश डालिए।

6. 'शुकनासोपदश' के अनुसार लक्ष्मी के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

7. 'शिवराजविजय' में वर्णित योगिराज के स्वरूप को अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।

8. महाकवि भारवि की भाषाशैली पर प्रकाश डालिए।

9. नीति तथा लोककथाओं से सम्बन्धित किन्हीं तीन ग्रन्थों की विषयवस्तु समझायें।

10. अम्बिकादत्त व्यास के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालिए।